Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, SEPT-OCT, 2022, VOL- 10/73

झारखंड के पत्रकारिता का इतिहास

चंदन कुमार, Ph. D.

वरीय समाचार संपादक, दैनिक जागरण, पीएचडी, राजस्थान विश्वविद्यालय

Paper Received On: 25 OCTOBER 2022

Peer Reviewed On: 31 OCTOBER 2022

Published On: 01 NOVEMBER 2022

Keyword: *History of Journalism of Jharkhand*

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

परिचय

झारखंड वाले भू भाग में आजादी से पहले यानी 1872 में संयुक्त बिहार के वक्त दो पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू हुआ था। इनमें पहली साप्ताहिक पत्रिका थी बिहार बंधु। इसके संचालक मदन मोहन भट्ट हुआ करते थे। संपादक हसन अली हुआ करते थे। इसी समय रांची से जर्मन मिशनरियों की एक पत्रिका शुरू हुई घरबंधु। यह धार्मिक पत्रिका थी जिसका प्रकाशन अब भी हो रहा है। इस पत्रिका का प्रकाशन ने 149 साल पूरे कर चुकी है। 2022 में इसके 150 साल पूरे होंगे। 1 वर्तमान में इस पत्रिका के मुख्य संपादक जीईएल चर्च के बिशप डांग हैं। विश्वयुद्ध के वक्त छोटानागपुर में उथल–पुथल की पूरी जानकारी उन दिनों पत्रिका देने का काम किया करती थी। इसी तह निष्कलंका भी मिशनरी की पत्रिका है जो 1920 से प्रकाशित हुई। इसके बाद संपादक रामराज शर्मा द्वारा अपर बाजार रांची से 1924 में छोटानागपुर पत्रिका प्रकाशित की थी। इसी तरह 1932 में राय साहब बंदीराम उरांव के संपादन में छोटानागपुर उन्नत समाज की पत्रिका आदिवासी समाचार पत्र निकले। 1937 नवंबर में बड़ाईक ईश्वरी प्रसाद सिंह के संपादन में गुमला से झारखंड नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ। इस पत्रिका ने झारखंड आंदोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। छोटानागपुर दूत, आदिवासी, चांदनी आदि पत्रिकाएं निकलीं और बंद हुई। 2

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आजादी के इस दौर में कई तरह कि पाबंदियां थी। नारी शिक्षा को उतना महत्व नहीं दिया जाता था। बावजूद सुशीला के घर का माहौल कुछ अलग था। यहां बेटियों को पढ़ाई की पूरी आजादी थी। इसका सुशीला ने जमकर फायदा उठाया। बेटी की पढ़ाई के प्रति बढ़ते रुझान को देख उनके पिता ने वर्ष 1931 में प्रयाग महिला विद्यालय पढ़ने के लिए भेज दिया। उन दिनों प्रयाग महाविद्यालय का काफी नाम था। वहां से सुशीला ने 1932 को विनोदिनी तथा 1934 को विदूषी की परीक्षा पास कर ली थी। वह भारत की पहली आदिवासी महिला थीं जिन्हें हिन्दी में विदूषी का गौरव प्राप्त हुआ था। बाद में उनका जुड़ाव लेखन और संपादन से भी रहा। वह आदिवासी और चांदनी जैसी पत्रिका से भी जुड़ीं रहीं। उन दिनों आदिवासी पत्रिका का प्रकाशन रांची से होता था। चांदनी का प्रकाशन चाईबासा में हुआ करता था। इन दोनों ही पत्रिका में आदिवासी आंदोलन और उनकी अभिव्यक्ति से जुड़े कंटेंट हुआ करता था। इस पत्रिका का संपादक देवेंद्रनाथ समद हुआ करते थे। बाद में समद जी बिहार के एमएलसी चुने गए। तब सुशीला संपादक की भूमिका निभाने लगी थीं।

इसी तरह धनबाद में 1930 को हीरेन्द्रनाथ चटर्जी उर्फ हीरेन चटर्जी ने हीरापुर में आर्ट प्रेस (।तज चतमे) की स्थापना की थी। इसी प्रेस से प्रतिभा नामक पहली लघु पत्रिका की शुरुआत हुई थी। 3 दावा किया जाता है कि देश आजादी के पहले 1922–23 में झरिया के व्यापारी खेड़ा राम ने अंग्रेजी शासन के खिलाफ लोगों में जागरूकता लाने के लिए झरिया मेल नामक हिन्दी अखबार की शुरुआत की थी। यह अखबार अनियमित था। 4 हालांकि लेखक व इतिहासकार सतीश चंद्र राय ने धनबाद के इतिहास नामक अपनी पुस्तक में स्पष्ट किया है कि 1947 से पूर्व धनबाद से कोई भी हिन्दी अखबार प्रकाशित नहीं हुआ था। करकेन्द के श्रीलेखा सिनेमा हाल के मालिक चंदू बाबू उर्फ सी. के ठक्कर तथा पत्रकार सतीशचंद्र की मदद से 1950 की जुलाई हफ्ते में युगांतर नामक साप्ताहिक पत्रिका की शुरुआत कराई थी। प्रकाशन का नेतृत्व मुकुटधारी सिंह कर रहे थे।

झरिया के ऊर्दू शायर मोहनलाल शेदा ने संगम नामक साप्ताहिक पत्रिका निकाली थी। आदिवासी समाज भी आदि काल से काफी समृद्ध रहा है। साहित्य के क्षेत्र में सुशीला समद का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। वर्ष 1906 के जून महीने में पश्चिमी सिंहभूम के चक्रधरपुर लाउजोड़ा गांव में जन्मी सुशीला के पिता मोहनराम सांडिल और माता लालमनी सांडिल थे। 5 इसके बाद हीरेन बाबू ने अपना अखबार ब्वंसपिमसक ज्पउमे का

प्रकाशन शुरू किया गया था। इस अखबार के शुरू होने के साथ ही उन दिनों बिहार के अमिय गुप्ता, हेमंत तरफदार, रामपद चौधरी जैसे जानेमाने पत्रकार जुड़ते चले गए थे। मानभूम के काल में धनबाद सहित अन्य इलाकों में कई बांग्ला पत्रिका की शुरुआत हुई थी। इनमें मर्मवीणा, कल्याणवार्ता, हरिजन कल्याण, संवाद, पल्लीसेवक, तपोवन, मंदिर, अग्रगामी, मानभूम और मालभूमि जैसी पत्रिका भी शामिल है। इसी दौर के पहली हस्तलिखित पत्रिका थी अंकुर। उन दिनों इस पत्रिका में विमल कर जुड़े हुए थे। इसके पूर्व भोजुडीह में मिताली तथा अभियान तथा झरिया से इंगित का प्रकाशन हो चुका था। इसके बाद धनबाद से प्रवाह नामक पत्रिका की शुरुआत हुई थी। माना जाता है कि इस पत्रिका का केवल सात ही अंक प्रकाशित हुए थे। उन दिनों यशोदाजीवन भट्टाचार्य तथा पुणेन्द्रु मुखर्जी इसका संपादन किया करते थे। पुणेन्द्रु जी पेशे से शिक्षक थे। वर्ष 1971 को स्फुलिंग की शुरुआत हुई। इसके संपादकीय टीम में थे पुर्णेंदू मुखर्जी, गोलोक बनर्जी, धीरेन्द्रनाथ मुखर्जी, सुधीर बनर्जी सहित अन्य। इस पत्रिका का सफल प्रकाशन 10 वर्ष तक निरंतर होता रहा। इसके बाद सीएफआरआइ से कथाकलि, बलाका व कथन। धनबाद के भागा से दिशारी डिगवाडीह से वह्नि का प्रकाशन शुरू हुआ था।

स्वतंत्रता के बाद की पत्रकारिता

अजित राय के अनुसार धनबाद इलाके में 1915–20 के बीच हिन्दीभाषियों का आगमन शुरू हुआ। विशेषकर कोयला उद्योग के राष्ट्रीयकरण के बाद भारी संख्या में लोगों का आगमन इस इलाके में हुआ। 1947 के पहले तक धनबाद महकमे में कोई भी ह्दिी अखबार या साहित्य पत्र नहीं था। उन दिनों बांग्लाभाषी कांग्रेसी मुखपत्र मुक्ति काफी लोकप्रिय था। यह पत्र पुरुलिया से निकला करता था। कांग्रेस नेता रंगलाल चौधरी ने उन दिनों ब्रह्मदेव सिंह शर्मा को इसी तरह का एक हिन्दी अखबार निकालने की सलाह दी थी। इसके बाद स्केच प्रेस के मालिक सह अध्यक्ष सचिन मल्लिक की मदद से ब्रह्मदेव सिंह शर्मा ने 15 अगस्त 1947 से धनबाद में पहला हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र आवाज का प्रकाशन शुरू कराया था। 6 वर्ष 1970 के अंत तक में अनन्या के नाम से दो पत्रिकाओं का जन्म साथ–साथ हुआ। 1970 के दशक में पहली अन्यया की शुरुआत डॉ. दीपक कुमार सेन के नेतृत्व में हुई थी। जबकि दूसरी अन्यया 1979 में सीएफआरआइ कालोनी से ग्रंथ के लेखक के संपादन में निकाली थी। 1980 के दशक में डिगवाडीह से तुलसी चक्रवर्ती ने वह्नि, भागा से सिद्धार्थ

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बनर्जी के संपादन में मीड़, गजुआटांड़ से सुबल दत्त की पत्रिका बिटुमिनस तथा हीरापुर की मानसी लाहिड़ी की पत्रिका महिला का प्रकाशन शुरू हुआ था। इसी दशक के अंत में हिल कालोनी के चंदन सरकार के संपादन में अश्वमेघ के प्रकाशन ने एक अलग पहचान बनाई। इसके साथ ही अश्वमेघ जैसी पत्रिका के साथ सुबल दत्त, अभिताभ चक्रवर्ती, देवाशीष चक्रवर्ती जैसे पत्रकार जुड़ते चले गए।

निष्कर्ष

देश में आजादी से पहले और बाद में छोटानागपुर सहित कोयलांचल में प्रिंट मीडिया का प्रभाव रहा है। इस दौरान कई समाचार पत्र बंद हुए तो कई खुले लेकिन इस दौर में पत्रकारिता पूरी तरह से सक्रिय रही। धनबाद सहित पूरे इलाके में अंग्रेजी, हिन्दी सहित अन्य स्थानीय भाषाओं में अखबार निकलते और बंद होते रहे। कोयले की खोज के साथ औद्योगिकरण का दौर इस इलाके में शुरू हुआ। इस काल में देश विभिन्न हिस्सों से अलग भाषा भाषी यहां कामकाज की तलाश में आकर बसे इन सब के वेश भूषा और भाषा के संस्कृ ति को आपस में जोड़ने का काम यहां की पत्रकारिता के जरिये शुरू हुआ। सक्रिय पत्रकारिता की वजह से कई बड़े आंदोलन भी हुए उनमें बिहार से झारखंड पृथक राज्य का होना भी एक है। बदलाव के इस दौर में भी कोयलांचल सहित झारखंड की पत्रकारिता काफी समृद्ध है। आज भी लोग भ्रममाहक खबरों से बचने के लिए प्रिंट मीडिया को सबसे बेहतर माध्यम मानते हैं। आज झारखंड में विभिन्न भाषा समाचार पत्र और पत्रिकाएं छप रही है।

संदर्भ

newswing-com@gharbandhu] बिहार झारखंड की एक मात्र पत्रिका जो 1872 से लगातार हो रही है प्रकाशित

www-jagran-com@jharkhand, झारखंड में ईसाई मिशनरियों ने की थी पत्रकारिता की शुरुआत, 30 May 2021

मुंडा दिनेश, अपने दौर की अप्रतिम रचनाकार, आदिवासी साप्ताहिक पत्रिका, अगस्त वर्ष 2021

राय अजित, धनबाद का इतिहास, पृष्ठ संख्या 161

राय अजित, धनबाद का इतिहास, पृष्ठ संख्या 162

राय अजित, धनबाद का इतिहास, पृष्ठ संख्या 163

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies